

Question: What are manners?

प्रश्न : शालीन व्यवहार क्या है?

Krishnamurti: Did you listen to what I was saying previous to your question, or were you so concerned with your question that you did not listen to what I was saying?

कृष्णमूर्ति : आपके प्रश्न से पहले मैं जो कह रहा था क्या उसे आपने ध्यान से सुना, या आप अपने प्रश्न में इतना डूबे थे कि मैं जो कह रहा था उसे सुन ही नहीं पाए?

You want to know what manners are. Manners are born of respect. If I respect you; I am kind, I am gentle. Respect and manners go together, don't they?—manners being conduct, conduct being behaviour, behaviour being action. That is, when a boy or girl or an elder person comes, I get up—not because he is an old man, not because he is a governor, not because he is somebody from whom I can get something, but because I have the feeling of respect for people whether they are poor or rich. Manners are conduct, behaviour, and it is necessary, is it not, to have manners, to be polite, not artificially—which means superficially—but to have good feeling for others. Having that good feeling for others, you become respectful, you have good manners, you talk quietly, you consider others. That is necessary, is it not, because when there are lots of people living together, if everyone was thoughtless, we should have a chaotic society. So manners, if they are the outcome, the natural outflow of deep respect and understanding and love, have a meaning, a significance; they are a beauty on this earth.

आप यह जानना चाहते हैं कि शालीन व्यवहार क्या है। शालीन व्यवहार आदर से आता है। यदि मैं आपका आदर करता हूँ तो मैं सहृदय हूँ, सौम्य हूँ। आदर और शालीनता साथ-साथ हुआ करते हैं, होते हैं न?—क्योंकि शालीनता आचरण का ही एक रूप है, और आचरण व्यवहार ही है तथा व्यवहार कर्म है। आशय यह है कि जब कोई बालक या बालिका या कोई बड़ा व्यक्ति आता है तो मैं उठकर खड़ा होता हूँ—इसलिए नहीं कि वह वृद्ध व्यक्ति है, इसलिए भी नहीं कि वह राज्यपाल आदि है, और न इसलिए कि मुझे आपसे कुछ प्राप्त होने की आशा है—बल्कि ऐसा इसलिए करता हूँ कि लोगों के प्रति मेरे मन में आदर की भावना है और वे गरीब हैं या संपन्न इससे मुझे कोई अंतर नहीं पड़ता। शालीनता आचरण का, व्यवहार का ही ढंग होता है और शालीन होना ज़रूरी है, अच्छे ढंग से व्यवहार करना, नम्रता से पेश आना, ऊपर से ओढ़ी हुई अर्थात् सतही नम्रता नहीं, बल्कि सचमुच दूसरों के प्रति सद्भावना रखते हुए व्यवहार करना आवश्यक है। अन्य लोगों के प्रति मन में सद्भावना होने पर आप उनके प्रति आदरपूर्ण होते हैं, आप अच्छे ढंग से व्यवहार करते हैं, आप शांति से बातें करते हैं, आप दूसरों को महत्त्व देते हैं। क्या यह आवश्यक नहीं है? ऐसा किया जाना आवश्यक है क्योंकि जब किसी स्थान पर बहुत सारे लोग एकत्र रह रहे हों और उनमें से सभी बिना सोचे-विचारे व्यवहार करने लगे तो सारी सामाजिक व्यवस्था अराजकतापूर्ण हो जाएगी। इसलिए जब शालीन व्यवहार मन में स्थित गहरी आदर भावना से उत्पन्न होकर आचरण का रूप लेता है, अपने भीतर की समझ तथा प्रेम से प्रकट होता है तो उसमें वास्तविक अर्थ होता है, और ऐसा व्यवहार इस धरती पर प्रकट सौंदर्य ही है।

Unfortunately, we learn superficial manners. Watch the way you talk to the servant and the way you talk to the

दुर्भाग्यवश हम सतही ढंग का आचरण सीख लेते हैं। इस बात पर गौर करें कि आप अपने नौकर से किस प्रकार बोलते हैं और प्रधानाध्यापक से किस

headmaster. To the one, you are tremendously respectful; to somebody who, you think, has got something to give you; you almost go on your knees. But to the coolie or to the poor beggar, you are indifferent, you do not care. But real consideration is when you have respect both for the poor man or the poor woman as well as the rich man. If in yourself you are rich, then you have affection, you have kindness for another—it does not matter whether he is a governor or a coolie.

Have you ever smelled a flower? The flower is not concerned whether the passerby is a rich man or a poor man. It has perfume, it has beauty, and gives it; it has no concern whether you are a boy or a governor or a cook. It is just a flower, and within itself is the beauty, the perfume.

If we have that sense of inward beauty, inward respect, inward love, inward feeling of being sensitive, then from that come nice, good, happy manners without compulsion. But without that, we are quite superficial; it is like putting on a coat—it looks very nice, but it is very shallow, empty.

Question: What is true love?

Krishnamurti: Again, the same business! We want a definition, we want words.

How can you love if there is fear? You see how easily we are satisfied with words. If I tell you what is true love, it will have no meaning for you. Is it not very important to find out if we love at all, not what is true love? Do we love a flower, a dog, husband, wife, child? Do we love the earth? Without

प्रकार से बात करते हैं। एक से आप अत्यंत आदरपूर्वक बोलते हैं, जिसके बारे में आपको विश्वास होता है कि आप उससे कुछ प्राप्त कर सकते हैं, उसके प्रति आप अत्यंत सम्मान दिखाते हैं, उसके पैरों तक झुक जाते हैं। किंतु एक कुली या भिखारी के प्रति आप अवहेलनापूर्ण होते हैं, आप उसकी ओर से उदासीन होते हैं। परंतु यदि आपमें वास्तव में सम्मान की भावना है तो आप गरीब स्त्री या पुरुष का तथा संपन्न व्यक्ति का एक जैसा आदर करेंगे। यदि आप वस्तुतः आंतरिक रूप से समृद्ध हैं तो आपमें प्रीति होगी, दूसरों के प्रति उदारता होगी और इस बात का आपके लिए कोई महत्त्व नहीं होगा कि वह कुली है या राज्यपाल है।

क्या आपने कभी फूल को सूंघकर देखा है? फूल यह नहीं देखता कि पास से गुजरने वाला मनुष्य धनवान है या निर्धन है। उसके पास सुगंध होती है, सौंदर्य होता है और वह उसे बिखेरता है, उसे इस बात से कोई मतलब नहीं होता कि आप एक बालक हैं कि राज्यपाल हैं या खाना बनाने वाले रसोइया हैं। उसके लिए फूल होना ही पर्याप्त होता है और इसमें ही उसकी सारी सुंदरता और सुगंध है।

यदि हममें आंतरिक सौंदर्य की, आंतरिक आदर की, आंतरिक प्रीति की इस तरह की समझ है, संवेदनशील होने की आंतरिक भावना है, तो बिना किसी बाध्यता के, हम सुंदर, शोभनीय और प्रसन्न आचरण करने लगते हैं। पर उसके अभाव में हम एकदम उथले होते हैं, शालीन व्यवहार तब पहने हुए उस कोट की तरह होता है, जो लगता तो बढ़िया है, पर भीतर तो अभी भी खोखलापन, खालीपन बना ही रहता है।

प्रश्न : वास्तविक प्रेम क्या है?

कृष्णमूर्ति : फिर वही बात। हम कोई परिभाषा चाहते हैं, शब्द चाहते हैं।

जब तक आप भयग्रस्त हैं तब तक प्रेम कैसे हो सकता है? आप देख रहे हैं कि हम कितनी आसानी से शब्दों से संतुष्ट हो जाया करते हैं। यदि मैं आपको बतला भी दूँ कि वास्तविक प्रेम क्या है तो इसका आपके लिए कोई अर्थ नहीं होगा। क्या अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि वास्तविक प्रेम क्या है इसका पता लगाने के बजाय हम इसका पता

knowing that, we talk about true love. The love we thus talk about may be phony love; it is unreal, it is an illusion.

How can I love if I have fear in me? I assure you it is one of the most difficult things to be free from fear. It is not easy. Without understanding the whole process of fear, the implications of fear—not only the conscious fears but the subtler fears that are hidden deep down—without understanding all that, it is no good asking what true love is. Then you can look it up in a dictionary and find out what ‘true’ means and what ‘love’ means. You see, the difficulty is, we have always been educated in what to think, but we do not know how to think; and the greatest difficulty is to break away from ‘what to think’ and to enter into the stream of ‘how to think.’ To break away from ‘what to think,’ we must know, we must be conscious, we must be aware that our whole education, our cultural upbringing is ‘what to think.’ You read the Bhagavad Gita or Shakespeare or Buddha or some other teacher or revolutionary leader, and you know what to think. They tell you exactly ‘what to think,’ and you think according to that pattern. That is not thinking at all; it is like a machine repeating, a gramophone playing over and over again. To know that and to stop it is the beginning of ‘how to think’.

लगाएँ कि हम प्रेम करते भी हैं या नहीं? क्या हमें किसी फूल के प्रति, किसी पिल्ले के प्रति, अपने पति, पत्नी या बच्चे के प्रति, प्रेम का एहसास है? क्या हमें इस धरती से प्रेम है? इसे जाने बिना ही हम सच्चे प्रेम की बात करने लगते हैं। जिस प्रेम के बारे में हम इस प्रकार से बातें करते हैं वह झूठ भी हो सकता है, वह प्रेम अवास्तविक है, एक भ्रांति है।

जब तक मुझमें भय है तब तक मैं प्रेम कैसे कर सकता हूँ? मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भय से मुक्त हो पाना सर्वाधिक कठिन कार्य है। यह सरल नहीं है। भय की संपूर्ण प्रक्रिया को समझे बिना, भय के सारे निहित तत्त्वों को समझे बिना—केवल चेतन स्तर के ही नहीं बल्कि बहुत गहराई में दबे सूक्ष्मतर भयों को—उस सबको समझे बिना, यह पूछने से कुछ नहीं होगा कि वास्तविक प्रेम क्या है। यह तो आप किसी शब्दकोश में भी देख सकते हैं और जान सकते हैं कि ‘वास्तविक’ का क्या मतलब है और ‘प्रेम’ का क्या मतलब है। देखिए कठिनाई यह है कि हमें हमेशा इसी बात की शिक्षा दी गई है कि हम क्या सोचें परंतु हमें मालूम नहीं कि हम किस प्रकार सोचें और सबसे बड़ा मुश्किल मसला है ‘क्या सोचा जाना चाहिए’ से मुक्त होकर ‘किस प्रकार से सोचा जाता है’ में प्रवेश करना। ‘क्या सोचा जाना चाहिए’ से छूटने के लिए हमें यह जानना होगा, इस बारे में सचेत होना होगा, इस बात के प्रति बोधयुक्त होना होगा कि हमारी शिक्षा-दीक्षा, हमारा पालन-पोषण ‘क्या सोचा जाना चाहिए’ के माध्यम से हुआ है। आप भगवद्गीता या शेक्सपीयर को या बुद्ध को अथवा किसी अन्य शिक्षक को, किसी क्रांतिकारी नेता को पढ़ते हैं और जान लेते हैं कि क्या सोचा जाना चाहिए। वे आपको ठीक यही बताते हैं कि ‘क्या सोचा जाना चाहिए’ और आप उसी ढांचे के अनुसार सोचने लगते हैं। यह तो सोच-विचार नहीं है, यह तो किसी यंत्र द्वारा की जाने वाली पुनरावृत्ति भर है, किसी ग्रामोफोन के बार बार बजने की तरह है। इस यंत्रवत प्रक्रिया को समझ लेना और इसे थाम देना ही ‘किस प्रकार से सोचा जाना चाहिए’ की शुरुआत है।